Acute Power Crisis in Industrial Belt in Delhi

1857. SHRI SURESH KALMADI: Will the Minister of POWER AND NON-CONVENTIONAL ENERGY SOURCES be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the industrial belt in Delhi comprising the Okhla Industrial Area, Najaf-garh Road, Mayapuri, G. T. Kamal Road and Wazirpur in Delhi are in the grip of an acute power crisis mainly on account of the failure of the distribution system; and

(b) if so, what steps arc propose to be taken to rectify the suitation?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF POWER AND NON-CONVENTIONAL ENERGY SOURCES (SHRI KALP NATH RAI): (a) and (b) The power supply position in Delhi is, by and large, satisfactory. The power requirements of the said industrial areas are also being met by DESU satisfactorily. However, sometimes marginal load shedding has to be carried out in the industrial areas during the restricted peak hours to maintain the system parameters of the Northern Grid. DESU is already strengthening/ augmenting its transmission and distribution system at various voltage levels to further improve the power supply position in Delhi.

नेशनल पॉवर ट्रांसमिशन कारपोरेशन की स्थापना

1858. श्री राम जेठमलानी : क्या विद्युत और गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में विद्युत के पारगमन में होने वाले भारी नुकसान को समाप्त करने के लिए नेशनल ट्रांसमिशन कारपोरेशन की स्थापना की गई है;

(ख) यदि हां, तो क्या कारपोरेशन ने अपना उत्तरदायित्व ग्रहण कर लिया है;

(ग) क्या कारपोरेशन को विद्युत पारगमन के साथ-साथ विद्युत का वितरण सम्बन्धी कार्य भी सौंपा गया है; यदि नहीं, तो इस समय विद्युत वितरण की क्या व्यवस्था है और यह कार्य कब तक कारपोरेशन को सौंप दिया जायेगा; और

(घ) कारपोरेशन को विद्युत के वितरण सम्बन्धी कार्य न सौंपे जाने की दशा में विद्युत पारगमन के दौरान होने वाले नुकसान की स्थिति में कारपोरेशन किस प्रकार से सुधार ला पायेगा?

विद्युत और गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री कल्पनाथ राय) : (क) क्षेत्र के अन्तर्गत तथा क्षेत्रों से बाहर विश्वसनीय सुरक्षित एवं मितव्यय रूप से केन्द्रीय क्षेत्र के अधीन विद्युत उत्पादन स्रोतों से भार केन्द्रों तक अधिसंख्य मात्रा में विद्युत का पारेषण करने की दृष्टि से सम्बन्धित एवं कुशल रूप से पारेषण प्रणाली और सम्बद्ध उपकेन्द्रों की स्थापना से सम्बन्धित कार्यक्रम को हाथ में लेने के मुख्य उद्देश्य से राष्ट्रीय विद्युत पारेषण निगम की स्थापना की गई है।

(ख) राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम, राष्ट्रीय जल विद्युत निगम, उत्तर-पूर्वी विद्युत शक्ति निगम तथा न्यूक्लीयर विद्युत निगम से सम्बन्धित जल शक्ति के साथ-साथ पारेषण प्रणालियों के प्रबन्ध का कार्य अब राष्ट्रीय विद्युत पारेषण निगम द्वारा हाथ में ले लिया गया है।

(ग) केन्द्रीय विद्युत उत्पादन स्रोतों से राज्य बिजली बोर्ड के ग्रिडों तक विद्युत के पारेषण का दायित्व राष्ट्रीय विद्युत पारेषण निगम को सौंपा गया है। सम्बन्धित राज्य बिजली बोर्ड अपने सम्बन्धित पारेषण, नेटवर्क के माध्यम से अन्ततः उपभोक्ताओं को आगे विद्युत वितरण किए जाने के लिए उत्तरदायी होगा।

(घ) राष्ट्रीय विद्युत पारेषण निगम द्वारा देश में विद्युत क्षेत्र में उच्च वोल्टता डायरेक्ट करंट (एच वी डी सी), ६००

के० वी० प्रणाली, अन्तर्राज्यीय तथा अन्तर्क्षेत्रीय लिंकों को समकालित करने जैसी नई प्रौद्योगिकी लागू किए जाने से पारेषण हानियों की मात्रा में कमी आएगी।

समुद्री लहरों के माध्यम से विद्युत उत्पादन

1859. डा० जिनेन्द्र कुमार जैन :
श्री राम जेठमलानी :

क्या **विद्युत और गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोत** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में समुद्री लहरों से विद्युत उत्पन्न करने वाली पहली परियोजना तैयार हो चुकी है; यदि हां, तो यह परियोजना किस स्थान पर स्थापित की गई है, उस पर कितनी धनराशि खर्च हुई है तथा उससे कितना विद्युत उत्पादन किये जाने का प्रस्ताव है;

(ख) क्या यह सच है कि इस प्रकार से किये जाने वाले विद्युत उत्पादन में अन्य साधनों के माध्यम से किए जाने वाले विद्युत उत्पादन की अपेक्षा उत्पादन लागत कम लगती है; और

(ग) यदि हां, तो इस संबंध में ब्योरा क्या है तथा समुद्री लहरों के माध्यम से बनाई जाने वाली विद्युत की उत्पादन लागत कितनी होगी ?

विद्युत और गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री कल्पनाथ राय) : (क) जी हां। महासागर विकास विभाग द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास को 150 कि० वा० की लहर ऊर्जा युक्ति के विकास के लिए एक अनुसंधान और विकास परियोजना मंजूर की गई गई थी। प्रायरूप युक्ति की स्थापना तिवेन्द्रम तट से दूर विझींजाम में की गई और 21 अक्तूबर, 91 से इसका परीक्षण किया जा रहा है। अब तक इसमें लगभग 2.4 करोड़ रुपये का व्यय हुआ है।

(ख) और (ग) चूंकि यह एक प्रायोगिक संयंत्र है इसलिए इस स्थिति में इसकी लागत का ठीक-ठीक अनुसार नहीं लगाया जा सकता, जोकि किसी भी स्थिति में परम्परागत स्रोतों द्वारा विद्युत उत्पादन की तुलना में सस्ती नहीं हो सकती क्योंकि पारंपरिक ऊर्जा स्रोत एक प्रमाणिक प्रौद्योगिकी है और इसके सापेक्ष मल्य की मितव्ययता प्रमाणित है।

देश में रुग्ण विद्युत परियोजनाएं

1860. डा० अबरार अमहमद :
श्री जगदीश जामी :

क्या **विद्युत और गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में इस समय कौन-कौन से विद्युत संयंत्र कार्य कर रहे हैं, उनकी उत्पादन क्षमता क्या है और विद्युत की खपत कितनी है तथा रुग्ण परियोजनाओं के नाम क्या हैं;

(ख) विद्युत संयंत्रों की स्थापना के लिए सरकार के पास विचाराधीन पड़ी नई योजनाओं का ब्यौरा क्या है, वे कब तक स्थापित कर दिये जायेंगे तथा किन-किन स्थानों पर स्थापित किए जायेंगे और उनकी उत्पादन क्षमता कितनी होगी; और

(ग) राजस्थान में विद्युत संयंत्र स्थापित करने के लिए कौन-कौन सी नई योजनाएं हैं और ऐसे संयंत्रों के क्या नाम हैं जिनके शीघ्र ही स्थापित किए जाने की सम्भावना है, ये कब तक स्थापित कर दिये जायेंगे और उन पर कितनी लागत आयेगी तथा उनकी उत्पादन क्षमता कितनी होगी ?

विद्युत और गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री कल्पनाथ राय) : (क) से (ग) सूचना